Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 10 | ISSUE : 3 | MARCH 2024

अलेक्जेन्डर वॉन हम्बोल्ट का जैव भूगोल की स्थापना में योगदान

अहमद मसाहिद [1]

[1] **सहायक आचार्य, भूगोल (अतिथि VSY), राजकीय कन्या महाविद्यालय बड़ा गुड़ा सोजत सिटी पाली (राज.).**

ABSTRACT:

हम्बोल्ट ने पाचीन ग्रीक से ब्रह्मांड शब्द के उपयोग की पुर्नजीवित किया और इसे अपने बहुखंडीय ग्रंथ कॉसमॉस में शामिल किया जिसमें उन्होंने वैज्ञानिक ज्ञान और संस्कृति की विभिन्न शाखाओं को एकीकृत करने का प्रयास किया। इस महत्वपूर्ण कार्य ने ब्रह्मांड की एक समग्र धारणा को एक परस्पर क्रियाशील इकाई को प्रेरित किया। जिसने पारिस्थिति की अवधारणा को प्रस्तुत किया जिससे पर्यावरण वाद के विचार सामने आये। उन्होंने अपने यात्रा अनुभवों के आधार पर मानव प्रेरित जलवायु परिवर्तन के कारण विकास के स्थानीय प्रभावों का वैज्ञानिक रूप से वर्णन किया।

KEYWORDS:

कॉसमॉस, विधितंत्र के पक्ष भौगोलिक संकल्पनाएं।

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
29th March 2024	30th March 2024

विषय प्रवेश:-

जार्ज फ्रॉस्टर के साथ हम्बोल्ट ने पश्चिमी यूरोप की यात्रा की, इस यात्रा से भौगोलिक प्रेक्षण की विधि और दृश्य भूमियों के वैज्ञानिक वर्णन की क्षमता का गहरा प्रभाव हम्बोल्ट पर पड़ा। अपनी विभिन्न यात्राओं से प्राप्त ज्ञान अर्जन के कारण हम्बोल्ट को बहुमुखी प्रतिभा का धनी कहा गया है। हम्बोल्टस ने कई पुस्तकों की रचना की -

(१) 1789 - राइनलैण्ड बेसाल्ट पर लिखा गया शोध।

(२) 1822- नई दुनिया के स्पेनिश उपनिवेशों के विभिन्न पहलुओं पर लिखे राजनीतिक लेख।

(3) 1823 - दोनों गोलार्दो की चट्टानों की विशिष्ट स्थिति पर भूवैज्ञानिक लेख।

(४) दक्षिण अमेरीका के आदिवासियों, उनकी सामाजिक संस्थाओं, शिल्पों आदि पर लेख।

(५) 1884 प्रकृति दिग्दर्शन।

(६) 1845-1862 के मध्य प्रकाशित - कॉसमॉस ग्रंथ।

1819 ई. में उन्होंने सर्वप्रथम, फ्रैंच भाषा में ' Essai sur la physique du monde' नाम से एक ग्रंथ लिखना प्रारंभ किया, जिसका जर्मनी में "कॉसमॉस" नामकरण किया गया।

कॉसमॉस का दर्शन निम्न चार स्तरीय विषय वस्तु पर आधारित है -

(१) भौतिक भूगोल को स्वतंत्र विज्ञान मानते हुऐ उसकी परिभाषा एवं सीमाएं बताकर उसे वैज्ञानिक आधार प्रदान किया।

(२) वस्तु बोधक या व्यावहारिक विषय वस्तु में प्राकृतिक तथ्यों के अनुभव पर आधारित ब्यौरे प्रस्तुत किये।

(३) चिंतन भावनाओं एवं क्रियाओं पर प्राकृतिक दर्शन के सिद्धांत के उद्भव का इतिहास और उसकी जैविक एकरुपता

उन्होंने अपने दर्शन का आधार 'पृथ्वी की एकता' को एक जैविक तथ्य के रूप में स्वीकार किया। हम्बोल्ट प्रारंभ से ही कांट के चिंतन से प्रभावित रहे जिसकी झलक Cosmos से मिलती है।

हम्बोल्ट की अध्ययन विधि या विधि तंत्र का मूल आधार वैज्ञानिकता थी। वे कल्पना पर नही बल्कि प्रत्यक्ष दर्शन पर विश्वास करते थे। उनके विधि तंत्र के प्रमुख पक्ष निम्नांकित है -

आनुभाविक विधि:- इसके द्वारा तथ्यों के प्रेक्षण, परीक्षण, मापन आदि प्रायोगिक क्रियाओं द्वारा जानकारी प्राप्त की जाती है । हम्बोल्ट की अध्ययन पद्धति आनुभविक और आगमनात्मक थी।

क्रमबद्ध विधि:- इसके द्वारा तथ्यों का अध्ययन वर्गीकृत विधि से विषयानुक्रम के अनुसार किया गया है। हम्बोल्ट इसके कट्टर समर्थक थे।

तुलनात्मक विधि:- हम्बोल्ट ने अपने इस विधि तंत्र के अंतर्गत दृश्य घटनाओं या तथ्यों के वितरण प्रतिरूपों तथा परीक्षणों की तुलना करते हुए अपने निष्कर्ष निकाले और सामान्यीकरण किया।

रेखाचित्रीय विधि:- हम्बोल्ट ने अपने निष्कर्षों के लिए तथ्यों के वितरण प्रतिरूपों को अधिक स्पष्ट करने के लिए मानचित्रो और आरेखों का प्रयोग करने का सफल प्रयास किया है।

सूक्ष्मता और परिशुद्धता:- इसमें प्रेक्षण की सूक्ष्मता और यथार्थता पर विशेष ध्यान दिया जाता है और तथ्यों का माप सूक्ष्म ढंग से किया जाता है। हम्बोल्ट अन्वेषण की आनुभाविक विधि पर बल देते थे और काल्पनिक या अनुमानों पर आधारित तथ्यों एवं विचारों पर विश्वात नहीं करते थे। उन्होंने अध्ययन और वर्णन की क्रमबद्ध विधि को ही अपनाया है। हम्बोल्ट तथ्यों और प्रदेशों की तुलना करते हुए किसी प्रदेश की विशेषताओं को समझने का प्रयास किया उनके निबंधों में तुलनात्मक विधि को अपनाया गया और उनमें तुलनाओं की बाहुलता पाई गई हैं। जटिल तथ्यों एवं विवरणों को समझाने के लिये हम्बोल्ट ने मानचित्रों और आरेखों का भी सहारा लिया।

हम्बोल्ट के अध्ययन विधि की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे पर्यवेक्षणों या मापों की शुद्धता पर बहुत ध्यान देते थे। हम्बोल्ट उन अग्रणीय वैज्ञानिकों में से एक थे जिन्होंने प्रथम बार कालमापी का प्रयोग करके स्थान- स्थान की देशांतरों को निश्चित किया था। एण्डीज पर्वत पर ऊंचाइयों के माप के लिये उन्होंने वायुदाबमापी का प्रयोग किया था वे अपने समय तक ज्ञात तकनीकों का प्रयोग अपने सर्वक्षणों में करते थे और सूक्ष्मता तथा परिशुद्धता पर अधिक बले देते थे।

हम्बोल्ट ने अपनी खोज यात्राओं के दौरान विभिन्न स्थानों के तापमान, वायुदाब, पवनों की दिशा, अक्षांश और देशांतर समुद्र तल से ऊंचाई चुम्बकिय भिन्नता, शैली की भिन्नता, वानस्पतिक प्रकारों आदि के निर्धारण में उच्चस्तरीय सूक्ष्मता और शुद्धता का पूर्णत: परिपालन किया था। इन्हीं गुणों के कारण हम्बोल्ट की पर्यवेक्षण एवं वर्णन विधि भावी

अन्वेषकों के लिए पंथ प्रदर्शक बन गयी।

भूगोल की संकल्पनाएं:-

हम्बोल्ट के द्वारा भूगोल को दी गई सात पक्षीय संकल्पनाएं प्रदान की गई जिनके आधार पर भूगोल का विकास होता रहा है -

(1) पृथ्वी तल की संकल्पना मानवीय विकास के रूप में:- मानव पृथ्वी पर भूगोल का केन्द्रीय बिन्दु है जिसके कारण मानव निवास या मानव घर के रूप में भूगोल का अध्ययन किया जाता है। यह संकल्पना आज तक सर्वमान्य है।

(2) संसार के 'स्थानिक वितरणों का विज्ञान -

(अ) हम्बोल्ट की मान्यता है कि "भूगोल संसार के क्षेत्रीय या स्थानिक वितरणों का विज्ञान है।"

(ब) इसके अंतर्गत केवल प्राकृतिक या भौतिक तत्वों का नहीं बल्कि संसार का अध्ययन होता है अर्थात पृथ्वी का तल जिस पर मानव का निवास है। इस तरह यह विश्व का विज्ञान है, जिस पर उन्होंने Cosmos नामक ग्रंथ भी लिखा है।

(3) सामान्य भूगोल का नाम भौतिक भूगोल है। हम्बोल्ट ने अपनी संकल्पनाओं में 'सामान्य' भूगोल के लिए ' भौतिक भूगोल' शब्द का प्रयोग करते है जिसके अंतर्गत मानव के अध्ययन को भी शामिल किया गया। परवर्ती काल में भौतिक भूगोल एवं मानव भूगोल दो शाखाएं हो गयी किन्तु हम्बोल्ट ने भौतिक भूगोल को मानव भूगोल के अधीन ही मानकर अपनी संकल्पना प्रस्तुत की थी।

(4) भूगोल संबंधों का अध्ययन है- हम्बोल्ट की मान्यता के अनुसार भूगोल का उद्देश्य पृथ्वी तल पर भौतिक और मानवीय संबंधो का अध्ययन एवं जैव- अजैव तथा मानव प्रकृति के बीच संबंधों की विवेचना और व्याख्या करना है।

(5) सांसारिक परिघटनाओं की समझ- सांसारिक परिघटनाओं के समाकलन के लिए जटिलता का सामना करना पड़ता है। अतः इसे समझने हेतु कम जटिल खण्ड समाकलनों में विभाजित करके उसका अध्ययन करना चाहिये। यह अनुसंधान का सबसे ऊंचा और सतत् उद्देश्य है।

(6) भूगोल में परिघटनाओं की विषमांगता- हम्बोल्ट ने अपनी संकल्पना में अन्य क्रमबद्ध विज्ञानों से भूगोल को अलग बताया क्योंकि उनके विपरित भूगोल में अध्ययन की जाने वाली परिघटनाओं में विषमांगता होती है।

(7) प्रकृति की एकता:- हम्बोल्ट के अनुसार प्रकृति एक ऐसा समन्वय है जो सृष्टि की समस्त वस्तुओं, चाहे वे रूप या गुण में काफी असमान ही क्यों न हो का परस्पर सम्मिश्रण कर एकता की स्थापना करती है, यही सिद्धांत 'एकता की संकल्पना' कहलाता है जिसका अध्ययन भूगोल में किया जाता है।

हम्बोल्ट के द्वारा विकसित उपरोक्त सात संकल्पनाओं के अतिरिक भी उन्होंने कई और दर्शन विकसित किये, जैसे कि उन्होंने कहा कि प्रकृति जीवन्त समष्टि है । उन्होंने इसे अन्योन्याश्रिता के माध्यम से समझाने का प्रयास किया है उन्होंने कहा कि मुझे अमेजन के वनों में विचरण करते हुए एंडीज पर्वत पर चढ़ाई करते हुए इसका सदा बोध होता रहा है कि सम्पूर्ण प्रकृति एक ध्रुव से दूसरे ध्रुव तक बसा हुआ है तथा उन सबमें एक ही आत्मा से अनु-प्रमाणिक है।

हम्बोल्ट ने भूदृश्य की संकल्पना प्रस्तुत करते हुए कहा कि "एक ही जीवंत समष्टि (आत्मा) भूतल के विभिन्न भागों में विभिन्न रूपों में प्रकट होती है जिसकी अपनी विशिष्टता होती है।" इसी संदर्भ में उन्होंने "वन लाइफ" - एक जीवन की संरचना प्रस्तुत की।

हम्बोल्ट ने पार्थिव एकता की संकल्पना को समझाने के लिये ' फ्लाई संकल्पना ' प्रस्तुत किया, जिसमें उन्होंने कहा कि एक तितली विपुवतीय प्रदेशों में अपने पंख हिलाती है तो इसका असर संपूर्ण विश्व की जलवायु पर पड़ता है।

हम्बोल्ट ने वेनेजुएला के वेलेन्सिया झील के सूखने का कारण बताया कि इस झील के किनारे मे अवस्थित वनों का तेजी से कटाव किया जा रहा है।

हम्बोल्ट ने अपने बताया कि भौगोलिक तथ्यों का अध्ययन प्रत्यक्ष रूप से अपने ज्ञानेंद्रियों से अनुभव करने किया जाना चाहिये। उन्होंने यह भी मत प्रतिपादित किया कि भौगोलिक तत्वों का विकास आगमनात्मक रूप से हुआ है।

साराश:-

अलेक्जेण्डर वॉन हम्बोल्ट को भूगोल में जलवायु विज्ञान, पादप भूगोल का श्रीगणेश करने का श्रेय जाता है क्योंकि इन्होंनें ही, संर्वप्रथम विश्व की प्राकृतिक वनस्पति तथा फसलों की ऊंचाई तथा तापमान के सम्बंध को स्पष्ट किया था। उन्होंने अपनी यात्रा के दौरान समताप रेखा पहली बार खींचने का प्रयास किया था। हम्बोल्ट ही थे जिनके द्वारा भूगोलीय घटनाओं की दीर्घावधिक मॉनिटरिंग वकालत की गयी और इस कार्य ने आधुनिक भूचुम्बकीय और मौसम वैज्ञानिक प्रेक्षणों का मार्ग प्रशस्त किया।

REFERENCES

1. डॉ. मामोरिया एवं जैन - भौगोलिक चिंतन

2. डॉ. आर.टी. घोष भौगोलिक चितंन

3. एल. सी. अग्रवाल - भौगोलिक विचारधाराएं

4. माजिद हुसैन - भौगोलिक चिंतन का इतिहास